Postal Reg. No.GDP -45 /2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 20

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

18 मई 2016 ई 21 शअबान 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

देखो, मैं यह कहकर प्रचार के कर्तव्य से निश्चिंत होता हूं कि गुनाह एक विष है इसको मत पियो। ख़ुदा की आज्ञा का पालन न करना एक घृणित मृत्यु है, उससे बचो। दुआ करो ताकि तुम्हें शक्ति प्राप्त हो।..... जो मनुष्य वास्तव में दीन (धर्म) को दुनियां पर प्राथमिकता नहीं देता वह मेरी जमाअत में से नहीं है ।..जो मनुष्य पूर्ण रूपेण प्रत्येक बुराई और प्रत्येक दुष्कर्म और प्रत्येक अनुचित व्यवहार से तौबा नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है ।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"यह मत सोचो कि हमने प्रत्यक्ष रूप से बैअत कर ली है। प्रत्यक्ष कुछ नहीं ख़ुदा की दृष्टि तुम्हारे दिलों पर है और उसी के अनुसार तुमसे व्यवहार करेगा। देखो, मैं यह कहकर प्रचार के कर्तव्य से निश्चिंत होता हूं कि गुनाह एक विष है इसको मत पियो। ख़ुदा की आज्ञा का पालन न करना एक घृणित मृत्यु है, उससे बचो। दुआ करो ताकि तुम्हें शक्ति प्राप्त हो। जो मनुष्य दुआ के समय ख़ुदा को हर बात पर सर्व शक्तिमान नहीं समझता सिवाए उसके वायदों के अपवाद के, वह मेरी जमाअत में से नहीं। जो मनुष्य झूठ और धोखा धड़ी को नहीं छोड़ता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य संसार के मोह में फंसा हुआ है, और आख़िरत की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य वास्तव में दीन (धर्म)को दुनिया पर प्राथमिकता नहीं देता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पूर्ण रूपेण प्रत्येक बुराई और प्रत्येक दुष्कर्म अर्थात मदिरा, जुआ, बुरी दृष्टि, ख़यानत, रिश्वत और प्रत्येक अनुचित व्यवहार से तौबा नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य प्रतिदिन पांचों समय की नमाज़ को अपने जीवन की दिनचर्या नहीं बनाता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुआ (प्रार्थना) में निरंतर लगा नहीं रहता और शालीनता से ख़ुदा का स्मरण नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य दुष्ट साथी को नहीं छोड़ता जो उस पर दुष्प्रभाव डालता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने माता-पिता का आदर-सम्मान नहीं करता और पुण्यादेशों में जो क़ुर्आनी शिक्षा के विरोधी नहीं, उन की आज्ञा का पालन नहीं करता और उनकी सेवा के कर्तव्य से लापरवाह है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपनी पत्नी और उसके संबंधियों से उदारता और शालीनता का व्यवहार नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य अपने पड़ोसी को तुच्छ से तुच्छ भलाई से भी वंचित करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य नहीं चाहता कि अपने दोषी का दोष क्षमा करे और द्वेष भाव रखता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है।

प्रत्येक मनुष्य जो अपनी पत्नी से और पत्नी अपने पति से ख़यानत का व्यवहार करती है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य उस प्रतिज्ञा को जो उसने बैअत करते समय की थी किसी प्रकार भी तोड़ता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो वास्तव में मुझे मसीह मौऊद और महदी नहीं समझता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य पुण्यादेशों में मेरी आज्ञा पालन करने के लिए तैयार नहीं वह मेरी जमाअत में से नहीं है। जो मनुष्य विरोधियों के साथ बैठकर उनका समर्थन करता है वह मेरी जमाअत में से नहीं है। प्रत्येक बलात्कारी, दुराचारी,शराबी, ख़ूनी, चोर, जुआरी, धरोहर को हड़पने वाला, घूस लेने वाला, दूसरों का अधिकार हनन करने वाला, अत्याचारी, झूठा, पाखण्डी और उसका साथी, अपने भाई बहनों पर अनुचित आरोप लगाने वाला, जो अपने दुष्कर्मों को त्यागकर क्षमा याचना नहीं करता और बुरी संगत का परित्याग नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है। यह सब ज़हर हैं तुम इन ज़हरों को पी करके किसी भी प्रकार बच नहीं सकते। अंधकार व प्रकाश एक स्थान पर एकत्र नहीं हो सकते। प्रत्येक मनुष्य जो पेचीदा स्वभाव रखता है और ख़ुदा के साथ स्वच्छ और पवित्र संबंध नहीं रखता वह उस अनुकम्पा को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता जो स्वच्छ और पवित्र हृदय वालों को प्राप्त होती है। क्या ही सौभाग्यशाली हैं वे लोग जो अपने हृदयों को हर दोष से पवित्र कर लेते हैं और अपने ख़ुदा से वफ़ादारी का दृढ़ संकल्प करते हैं, क्योंकि वे कदापि व्यर्थ नहीं किए जाएंगे। संभव नहीं कि ख़ुदा तआला उनको अपमानित होने दे क्योंकि वे ख़ुदा के हैं और ख़ुदा उनका, वे प्रत्येक आपदा और विपदा के समय सुरक्षित रखे जाएंगे। मूर्ख है वह शत्रु जो उनको अपनी शत्रुता का लक्ष्य बनाए, क्योंकि वे ख़ुदा की गोद में हैं और ख़ुदा उनका सहायक है। ख़ुदा पर किसकी आस्था है ? केवल उन्हीं की जिनका उल्लेख ऊपर किया गया है। इसी प्रकार वह मनुष्य भी मूर्ख है जो एक मुंहफट पापी, दुष्ट, दुराचारी के अधीन है क्योंकि उसका स्वयं विनाश होगा। ख़ुदा ने जब से धरती और आकाश की रचना की कभी ऐसा अवसर नहीं आया कि उसने सज्जन पुरुषों को धरती से नष्ट कर दिया हो, अपितु वह उनके लिए बड़े-बड़े कार्यों का प्रदर्शन करता रहा है और अब भी करेगा। वह ख़ुदा असीम वफ़ादार है, और वफ़ादारों के लिए उसके अद्भुत कार्य प्रदर्शित होते हैं। दुनियॉ चाहती है कि उनको मिटा दे और प्रत्येक शत्रु उन पर दांत पीसता है परंतु ख़ुदा जो उनका मित्र है, प्रत्येक विनाश से उनकी रक्षा करता है, प्रत्येक मैदान में उनको विजय प्रदान करता है । वह मनुष्य बड़ा सौभाग्यशाली है जो उस ख़ुदा का दामन न छोड़े । हमने उसे स्वीकार किया और पहचाना।

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 18 -20)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

☆सरकार और विधायकों का काम है कि अपनी जातियों के रक्षक के रूप में वह अपने नागरिकों के अधिकारों के हनन करने के बजाय ऐसे तरीके पर कानून बनाएं जिस से उनके नागरिकों के अधिकार कायम हों ☆बेहद अफसोस की बात है कि मुस्लिम देशों शरारत और अस्थिरता का केंद्र बने हुए हैं हालांकि उनके धर्म ने उन्हें शांति की स्थापना के लिए बहुत उच्च शिक्षा दी हैं

कनाडा संसद में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लात तआला बेनसरहलि अज़ीज़ का ऐतिहासिक ईमान वर्धक ख़िताब (संबोधन) (भाग-2)

दिनांक 17 अक्तूबर 2016 को सय्यदना ज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ कनाडा की संसद "संसद हिल " में पधारे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का संसद में यथा योग्य स्वागत किया गया। संसद में विभिन्न सीनेटरों, मिनिस्टरों ने हुज़ूर अनवर से मुलाकात की। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने संसद में दुनिया के हालात और शांति के बारे में ख़िताब फरमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के खिताब को उलेमा ओ राजनेताओं और जीवन के विभिन्न विभाग से संबंधित लोगों ने बेहद पसंद किया और अपने विचार अभिव्यिक्त किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का यह ईमान वर्धक ख़िताब पाठकों के लिए प्रस्तुत है (संपादक)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं कभी यह नहीं कहता कि उग्रवादी वर्ग को सहन करना चाहिए या उन्हें अपने विचारों और विश्वासों के पालन की अनुमति देनी चाहिए। जहां भी और जब भी कोई व्यक्ति अपने धर्म को आधार बनाकर अत्याचार करे, अन्याय करे दूसरों के अधिकारों का हनन कर राज्य के ख़िलाफ काम करे या किसी भी रूप से देश की अखंडता को प्रभावित करे तो निश्चित रूप से यह सरकार और अधिकारियों की ज़िम्मेदारी है कि वह सभी ऐसी नकारात्मक गतिविधियों को सख्ती से रोके। ऐसे हालात में सरकार और विधायकों और अन्य संबंधित अधिकारियों के लिए यह बिल्कुल वैध है कि ऐसे लोगों की जड़ काटे और घरेलू कानून के अनुसार उन्हें सज़ाएं दे। लेकिन मेरी नज़र में यह बात ग़लत है कि ऐसे धार्मिक विश्वासों और रस्मों जिन पर शांतिपूर्ण रहते हुए पीछा किया जा रहा है उनमें अनावश्यक रूप में राज्य हस्तक्षेप करेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस्लाम जिसे हम जानते हैं और जिस पर हम विश्वास करते हैं, वह तो हमें सिखाता है कि मुसलमान के रूप में देश से प्रेम करना तुम्हारे ईमान का एक अभिन्न अंग है। इस्लाम के अनुसार किसी का देश वह जगह है जहां वह रहता है और जहां से वह लाभ प्राप्त करता है और जब ऐसी शिक्षा मुसलमानों के दिल और दिमाग में सुदृढ़ होगी तो इसके लिए असंभव होगा कि वह अपने देश के लिए बुरा सोचे या अपने देश को नुकसान पहुंचाने का इच्छुक हो।

इस्लाम के अनुसार न केवल घरेलू कानून ऐसे लोगों को सज़ा देगा जिस ने अपने देश के ख़िलाफ कदम उठाया है बल्कि ऐसे लोग निश्चित रूप से ख़ुदा के सामने भी जवाबदेह हैं और ख़ुदा तआला उनसे उनके बुरे कामों और देशद्रोह का हिसाब करेंगे। इसलिए एक वास्तविक मुसलमान से डरने की कतई ज़रूरत नहीं है और न ही किसी सरकार को ज़रूरत है कि वह मामूली धार्मिक मामलों और तरीकों के ख़लिाफ नियम बनाए जिन से समाज के व्यक्तियों या राज्य को कोई नुकसान और खतरा नहीं। ऐसे मामलों में कानून बनाने को यही कहा जा सकता है कि यह अनावश्यक हस्तक्षेप और स्वतंत्रता का हनन करना है जिस की रक्षा का पश्चिम बड़े गर्व से दावा करता है। अर्थात कि हर व्यक्ति को अपनी हस्ती में पूर्ण स्वतंत्रता और संप्रभुता का पूरा अधिकार है। ऐसा अनुचित हस्तक्षेप निस्संदेह कोई सकारात्मक परिणाम प्रकट नहीं कर सकता। इससे केवल बेचैनी, बे-आरामी और अविश्वास बढ़ेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यह सरकार और विधायकों का काम है कि अपनी क़ौमों के रक्षक के रूप में वह अपने नागरिकों के अधिकारों का हनन करने के स्थान पर ऐसे तरीके पर कानून बनाएं जिससे उनके नागरिकों के अधिकार स्थापित हों। इस पर त्वरित कार्यान्वयन होना चाहिए ताकि सभी लोगों के अधिकार हर समय कायम रखे जा सकें चाहे वह मुसलमान हों, ईसाई हों, हिंदू हों, सिख हों या और किसी धर्म के हों या नास्तिक हों। जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं कि यह बड़े दु:ख की बात है कि मुस्लिम देशों और कुछ ग़ैर मुस्लिम विकसित देशों में भी कुछ ऐसी नीतियां बना दी गई हैं जो कि स्वतंत्रता के बुनियादी सिद्धांतों की जड़ काटने वाली हैं जिस से जनता के विभिन्न वर्गों में बेचैनी पैदा हो रही है इसलिए बड़ी शक्तियों को चाहिए कि वह दिखावे की बजाय बड़ी छवि को सामने रखें और देखें कि कैसे वे अपने देशों में शांति स्थापित कर सकते हैं। उन्हें चाहिए कि वे इस बात को सुनिश्चित करें कि उनका देश और शेष दुनिया एकजुट हो और हमेशा समृद्धि की तरफ जाने वाले हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि बजाय इस के कि वे भविष्य के बारे में सोचें, लगता है कि अक्सर शासक और सरकारें सत्ता हासिल करने की दौड़ और दूसरों पर अपनी प्राथमिकता साबित करने की लड़ाई में लगी हुई हैं। फलस्वरूप सत्ता और नेतृत्व की इस लालसा के कारण वह बढ़चढ़ कर अपने नागरिकों के निजी और धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप कर रही हैं। ऐसी नीतियां अनावश्यक हैं और दुनिया को अधिक अस्थिरता की ओर ले कर जाने वाली हैं। खासकर इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हम पहले से ही कई कठिनाइयों और समस्याओं का सामना कर रहे हैं जो कि समाज के अमन लिए खतरा बने हुए हैं। उदाहरण के रूप में कहा जाता है कि पर्यावरण में बदलाव भी मानव आबादी के लिए बहुत बड़ा खतरा है। फिर आर्थिक दृष्टि से भी दुनिया अनिश्चित की स्थिति से ग्रस्त है। फिर दुनिया के अक्सर भागों में असुरक्षा और अशांति भी समस्या बनी हुई है। यह सब समस्याएं अनुचित रणनीति, असमानता और असंतुलन का परिणाम हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर हम जलवायु परिवर्तन को ही ले लें तो हम देखते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग की एक बड़ी वजह पश्चिम में आने वाला औद्योगिक क्रांति और अत्यधिक जंगलों का काटा जाना है। अब जबकि ये देश विकसित हो चुके हैं कार्बन में कमी और दूसरी औद्योगिक प्रतिबंधों की मांग कर रहे हैं। लेकिन ऐसे नियम चीन और भारत जैसी उभरती शक्तियों के विकास को धीमा और उनमें बाधा पैदा करेंगे। इसलिए ये उभरते हुई शक्तियां इन प्रतिबंधों को अन्यायपूर्ण और पाखंडी मानती हैं और समझती हैं कि यह बड़ी शक्तियों द्वारा उनके विकास को रोकने और उनकी ओर से "विश्व व्यवस्था" को चुनौती देने के ख़िलाफ एक कदम है। इसलिए जलवायु परिवर्तन का मुद्दा केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं, यह दुनिया की अशांति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और राष्ट्रों के बीच तनाव भी पैदा कर रहा है। इसी तरह वैश्विक आर्थिक समस्याओं के संदर्भ में अब विशेषज्ञ यह बात मानने पर मजबूर हो गए हैं कि विभिन्न सरकारों की मूर्खता पूर्ण नीतियां और आर्थिक अनिश्चितता अब इस मोड़ पर आ चुकी है, जहां यह विश्व शांति को भी खतरा में डाल रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इन कारणों के अलावा और भी कई कारक हैं जो विश्व शांति को प्रभावित रहे हैं और खेद के साथ कहना पड़ता है कि उनका तानाबाना स्वार्थ और अनुचित नीतियों से जाकर मिलता है जो विभिन्न देशों ने लागू की हुई हैं। बहरहाल इन खतरों के मद्देनज़र दुनिया एक बड़ी तबाही की तरफ बढ़ रही है। इस अस्थिरता की वजह से सरकारें और जनता दोनों की परेशानी और डर में लगातार वृद्धि होती जा रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: बहुत सी परेशानियां और समस्याएं हैं और दुनिया को समझ नहीं आ रही कि किस समस्या को सबसे पहले लिया जाए। क्या वे ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन पर पहले ध्यान दें या आर्थिक मुद्दों पर बात करें या फिर आतंकवाद, चरमपंथ से

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हमारे लोगों की आदत है कि ऐन मौके पर काम शुरू करते हैं और इस ख़ुशफहमी में रहते हैं कि काम हो जाएगा। अल्लाह तआला की कृपा है कुछ स्थान पर आपातकालीन रूप में काम हो भी जाते हैं। जिस तरह जमाअत अहमदिया के काम होते हैं और शायद किसी और के नहीं हो सकें लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि पहले planing न की जाए।

अल्लाह तआला प्रशासन को बुद्धि और समझ दे और ख़ुश फहमी में पीड़ित होने से उन्हें बचाए और वास्तविकता को समझते हुए यह काम करने वाले हों। आप लोगों ने अपने उहदेदार चुने हैं तो आपका कर्तव्य भी बनता है कि उनके कार्यों में अनुमान पैदा करने के लिए और बुद्धि पैदा करने के लिए उनके लिए नियमित दुआ भी करते रहा करें।

जमाअत तो इंशा अल्लाह बढ़नी है और बढ़ रही है इसलिए जो भी स्थान हम लेंगे छोटे होते जाएंगे लेकिन एक जगह लेकर फिर अपनी सुस्ती के कारण कई साल प्रयोग न करके यह कह दें कि यह जगह भी तंग हो गई तो यह कोई जवाब नहीं न समझदारी है।

आदरणीय प्रोफेसर अश्फाक अहमद साहिब शहीद आफ सबज़ा ज़ार लाहौर, आदरणीय एच नासरुद्दीन साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज गोदावरी इंडिया, और आदरणीया साहिबज़ादी अमतुल वहीद साहिबा पत्नी आदरणीय मिर्ज़ा ख़ुरशीद अहमद साहिब की वफात, मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

इन लोगों की कुछ विशेषताएँ ऐसी हैं जो जमाअत के हर वर्ग के लिए नेक उदाहरण हैं और यही ऐसी बातें हैं जो हम में से बहुतों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं बहुतों के लिए इनमें शिक्षाऐं हैं। प्रत्येक की सीरत के पहलू जो मेरे सामने लाए गए हैं या जो मुझे पता है वे ऐसे हैं जो उन को مَّنۡ قَضٰی نَحۡبَہٗ (सूरत अल्अहज़ाब:24)का मिसदाक़ बनाते हैं। जो अपने पदों और अपने इरादों और निय्यतों को पूरे करने वाले लोग थे। जिन्होंने धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देते हुए अपना जीवन बसर किया और इसी तरह अल्लाह तआला के सम्मुख हाज़िर हो गए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 14 अप्रैल 2017 ई. स्थान - रनहैम फ्रेनकफोर्ट, जर्मनी

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

सबसे पहले तो मैं यह कहना चाहूँगा कि जुम्अः के लिए जमाअत ने यहां आज जो जगह ली है और अगले जुम्अः के लिए भी यही कहा जाता है कि यहां जुम्अः होगा, यहाँ एयरपोर्ट निकट होने के कारण और विमानों की आवाजाही के कारण विमानों का शोर हो सकता है। शायद कुछ समय बहुत अधिक हो। मैं कोशिश करूंगा कि मेरी आवाज़ शोर के बावजूद पहुँचती रहे और शब्द भी आप को समझ आते रहें। यदि इस सीमा तक शोर है जैसा कि अभी है तो यह तो संतोषजनक है। यह हवा के रुख़ पर भी निर्भर करता है। यह कहते हैं कि अगर हवा का रुख़ इस ओर हो तो आवाज़ ज्यादा आएगी अगर उल्टी तरफ हो तो कुछ कम होगी। बहरहाल जगह की तंगी की वजह से बैतुस्सुबूह में जुम्अः हो नहीं सकता था और उचित मूल्य पर जमाअत को कोई जगह या हॉल, यह कहते हैं हमें नहीं मिली। वैसे लगता है कि अगर समय पर कोशिश करते हैं तो यह मिल भी सकती थी, लेकिन हमारे लोगों की आदत है कि ऐन मौके पर काम शुरू करते हैं और इस ख़ुशफहमी में रहते हैं कि काम हो जाएगा। अल्लाह तआला की कृपा है कुछ स्थान पर आपातकालीन रूप में काम हो भी जाते हैं। जिस तरह जमाअत अहमदिया के काम होते हैं और शायद किसी और के नहीं हो सकें लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि पहले planing न की जाए। यही ख़ुशफहमी और ध्यान न देना और महत्त्व का एहसास न होना है जिसकी वजह से नई ख़रीदी हुई इमारत बैतुल अफियत है वहाँ अभी तक जुम्अः या किसी प्रकार के कार्यक्रम करने की अनुमति नहीं मिली।

पिछले साल जब मैं जलसा में आया था तो बैतुस्सुबूह में जुम्अः पढ़ाया गया था और जगह की तंगी की वजह से महिलाओं और आसपास की जमाअतों को भी रोका गया था कि जुम्अः को न आएं। उस समय मैंने जमाअत के प्रशासन को कहा था कि बैतुल आफियत के उपयोग की अनुमति जल्दी लें ताकि इस तरह की परेशानियों का सामना न करना पड़े। मेरे विचार में या कम से कम उनकी रिपोर्टों के अनुसार गंभीरता से अब यह उस समय से कोशिश कर रहे हैं लेकिन परिषद कुछ छोटे छोटे आरोप लगाती चली जा रही है। तो ये बातें उन्हें पहले ध्यान में रखनी चाहिए थीं कि परिषद कोई उनके अधीन नहीं है कि जाएंगे और निकासी ले लेंगे। जब इमारत खरीदी गई थी तब से गंभीरता से और तुरंत उसके उपयोग की अनुमति और जो भी परिवर्तन करने थे उस पर काम शुरू हो जाना चाहिए था और अगर वह काम शुरू होता तो आज इतनी दिक्कत न होती। यद्यपि उनके विचार में आज की यह जगह बहुत बड़ी जगह थी और ईस्टर की छुट्टी की वजह से लोगों के अधिक आने के कारण भी यह जगह भी कम हो रही है और यह तंगी बैतुल आफियत में भी हो सकती थी लेकिन सामान्य जुम्अे वहाँ अदा किया जा सकता थे। दो तीन साल हो गए हैं इमारत ख़रीदे हुए और अब तक इसके उपयोग में कुछ रोकें हैं। उस समय जब यह इमारत ख़रीदी गई थी दुनिया के हालात भी कुछ बेहतर थे। मुसलमानों के हवाले से कुछ बेहतर स्थिति थी और इसलिए जल्दी अनुमति भी मिल सकती थी अगर उस समय काम शुरू होता लेकिन आज मुसलमानों के बारे में जो उन की शंकाएं है वे बढ़ गई हैं इस कारण से दिक्कतें भी पैदा हो रही हैं शायद अमीर साहिब और प्रशासन यह कहे कि यह कारण नहीं है इस तरह होना ही था लेकिन बहरहाल यह उन की सुस्ती है और हर काम को लटकाने की आदत भी है जिसकी वजह से आज हमें दिक्कतें आ रही हैं। अल्लाह तआला प्रशासन को बुद्धि और समझ दे और ख़ुश फहमी में पीड़ित होने से उन्हें बचाए और वास्तविकता को समझते हुए यह काम करने वाले हों। आप लोगों ने अपने उहदेदार चुने हैं तो आपका कर्तव्य भी बनता है कि उनके कार्यों में अनुमान पैदा करने के लिए और बुद्धि पैदा करने के लिए उनके लिए नियमित दुआ भी करते रहा करें।

बहरहाल कुछ मिनट में ही हम ने तीन चार जहाज गुज़रने की आवाज़ें सुन लीं यह तो सहन करना पड़ेगा। अन्यथा यही हो सकता था कि सीमित संख्या में लोगों को जुम्अः को आने के लिए कहा जाता और महिलाओं पर भी प्रतिबंध लगा दिया जाता। पाकिस्तान में या उन देशों में जहां जमाअत का विरोध है और परिस्थितियों के कारण महिलाओं को जुम्अः पर आने से रोका जाता है। इसी दौरान जुमऐ विभिन्न स्थानों पर पढ़े जाते हैं एक केंद्रीय स्थान पर नहीं पढ़े जाते। अल्जीरिया में तो पूरी

तरह पाबंदी है कि किसी केंद्र में भी बल्कि घरों में भी जुम्अ: नहीं हो सकता। तो वहाँ तो क्रूर कानून और दुश्मन के डर की वजह से यह हो रहा है और यहां जहां धार्मिक स्वतंत्रता है वहाँ यह रोक लगाना हमारे सुस्ती और मामलों के महत्त्व को न समझने की वजह से हो जाएगा और हो रहा है। बहरहाल दुआ है कि भविष्य में जुम्अ: के लिए अर्थात् अगला आने वाला जुम्अ: तो नहीं जो आगामी जब भी कार्यक्रम बनेगा आने का इंशाअल्लाह तब बैतुल आफियत के उपयोग की अनुमति मिल जाएगी या कम से कम उन्हें ऐसी जगह मिल जाए जहां सब आराम से आ जाएं, सिमट जाएं। यह तंगी वहाँ बैतुल आफियत में भी कुछ समय के लिए तो दूर हो सकती है। जमाअत तो इंशा अल्लाह बढ़नी है और बढ़ रही है इसलिए जो भी स्थान हम लेंगे छोटे होते जाएंगे लेकिन एक जगह लेकर फिर अपनी सुस्ती के कारण कई साल प्रयोग न करके यह कह दें कि यह जगह भी तंग हो गई तो यह कोई जवाब नहीं न समझदारी है।

बहरहाल आज के ख़ुत्बा के लिए पहले तो मैं कुछ और विषय लिया था लेकिन फिर कुछ मरहूमीन का जनाज़ा पढ़ाना था इसलिए उनकी कुछ बातें सामने आ गईं इसलिए आज मैंने सोचा है कि उन्हीं की चर्चा करूंगा जिन में से एक शहीद है एक मुरब्बी सिलसिला है, और एक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पोती हैं। इन लोगों की कुछ विशेषताएँ ऐसी हैं जो जमाअत के हर वर्ग के लिए नेक उदाहरण हैं और यही ऐसी बातें हैं जो हम में से बहुतों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं बहुतों के लिए इनमें शिक्षाऐं हैं। अत: मैंने उचित समझा कि बजाय उनके मरहूमीन का थोड़ा उल्लेख करूं कुछ खोलकर उनके बारे में बयान करूं। प्रत्येक की सीरत के पहलू जो मेरे सामने लाए गए हैं या जो मुझे पता है वह ऐसे हैं जो مِّنۡ قَضٰى نَحۡبَهٗ (सूरत अल्अहज़ाब:24)का मिसदाक़ उनको बनाते हैं। जो अपने पदों और अपने इरादों और निय्यतों को पूरे करने वाले लोग थे। जिन्होंने धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देते हुए अपना जीवन बसर किया और इसी तरह अल्लाह तआला के सम्मुख हाज़िर हो गए।

इनमें से पहले हमारे शहीद भाई प्रोफेसर डॉ अशफाक अहमद साहिब हैं जो पिछले जुम्अ: शहीद किए गए। प्रोफेसर डॉ सेवानिवृत्त अशफाक अहमद साहिब शेख सुल्तान अहमद साहिब लाहौर के पुत्र थे। उनकी उम्र 68 साल थी। पिछले जुम्अ: यह नमाज़ जुम्अ: अदा करने के लिए अपनी कार में बैतुल तौहीद में जा रहे थे कि रास्ते में एक मोटर साइकिल सवार अहमदी विरोद्धी ने फायरिंग कर के उन्हें शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। जानकारी के अनुसार कहते हैं घटना के दिन शहीद मरहूम अपने बारह वर्षीय पोते प्रिय शाह ज़ैब और हलका सबज़ह ज़ार के एक अहमदी दोस्त आदरणीय ज़हीर अहमद साहिब के साथ अपनी कार में जुम्अ: के लिए मस्जिद जा रहे थे। शहीद मरहूम ख़ुद कार ड्राइव कर रहे थे उनका पोता आगे दूसरी सीट पर बैठा था। दूसरे दोस्त पीछे बैठे थे। सबज़ह ज़ार से मुल्तान रोड पहुंचे जहां सड़क निर्माणाधीन होने के कारण यातायात रुका हुआ था। उनकी कार रुकते ही हेलमेट पहने हुए एक मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति ने ड्राइविंग सीट के पास आकर उनकी कनपटी पर पिस्तौल रखकर गोली चला दी और फरार हो गया। फायर लगने से गोली कनपटी से आर-पार हो गई और मौके पर ही आप शहीद हो गए और दूसरे दोनों सुरक्षित रहे उन्होंने उन्हें कुछ नहीं कहा ।

शहीद मरहूम परिवार में अहमदियत का आरम्भ शहीद स्वर्गीय के दादा आदरणीय शेख अब्दुल कादिर साहिब द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की लुधियाना तशरीफ़ लाने के ज़माने में हुआ। आप के परिवार का संबंध संगरूर पूर्वी पंजाब भारत से था। इस क्षेत्र के एक बुजुर्ग आदरणीय पीर मीरां बख्श साहिब ने अहमदियत स्वीकार करने के बाद शहीद स्वर्गीय के दादा को अहमदियत स्वीकार करने की तरफ आमंत्रित किया। शहीद स्वर्गीय के दादा ने परिवार सहित अहमदियत स्वीकार कर ली। पाकिस्तान की स्थापना से पहले शहीद स्वर्गीय के दादा वफात गए थे। पाकिस्तान की स्थापना के बाद उनकी दादी सुश्री आयशा साहिबा ने परिवार की अध्यक्षता करते हुए परिवार के साथ भारत से पाकिस्तान लाहौर हिजरत की। कुछ समय शिविर में रहने के बाद फिर संत नगर लाहौर में रहने गए जहां शहीद मरहूम सन् 1949 में पैदा हुए। कुछ साल बाद यह परिवार रबवा में स्थानांतरित हो गया। शहीद मरहूम की प्रारंभिक शिक्षा रबवा की है मैट्रिक पास करने के बाद पशु कॉलेज लाहौर में प्रवेश किया। फिर दोबारा इन का परिवार इसलिए लाहौर चले गया। एम.एस.सी पशु के बाद पशु कॉलेज में बतौर लेक्चरार नौकरी की और फिर प्रोफेसर के पद तक तरक्की हुई। स्वर्गीय के पिता शेख सुल्तान अहमद साहिब पंजाब पुलिस में सब इंस्पेक्टर थे और फिर एफ एस जब बनी है तो वहाँ इंस्पेक्टर की सेवा करते रहे। मरहूम अल्लाह की कृपा से मूसी थे। ख़िलाफत से अत्यधिक प्रेम रखते थे। तहज्जुद पढ़ने वाले और आतिथ्य और मानवीयता करने वाले उहदेदारों का पालन करने वाले नेक इंसान थे। हमेशा जमाअत की सेवा में आगे रहते और बहुत उच्च नैतिकता के मालिक थे। दावत इल्लल्लाह का बहुत शौक था उच्च नैतिकता और मिलनसार होने के कारण अपने छात्रों और सहयोगी प्रोफेसरों में समान रूप से लोकप्रिय थे। अक्सर अपने साथी प्रोफेसरों को घर पर खाने पर बुला लिया करते थे और जमाअत का प्रभावी ढंग से परिचय करवाते। इसलिए कभी-कभी आप को धमकियां भी मिलती थीं लेकिन कभी परवाह नहीं की बल्कि कहा करते थे यह तो मामूली बात है। बचपन से ही शहीद मरहूम को जमाअत की सेवा की भावना बहुत ज्यादा था और जमाअत और संगठनात्मक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में काम करने की तौफ़ीक़ मिली। क्षेत्र सबज़ह ज़ार में निवास होने के बाद क्षेत्र के सदर और उपाध्यक्ष ज़ईम आला के रूप में उत्तम रूप में सेवा की तौफ़ीक़ मिली। इस साल आप की नियुक्ति बतौर सैक्रेटरी दावत इलल्लाह अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर में हुई थी और बड़े अच्छे ढंग से आप ने ने दावत इलल्लाह शुरू किया था कार्यक्रम बनाए थे। उनकी पत्नी को जोड़ों की बीमारी थी बड़ा लंबा समय बीमार रहीं और बड़ी खुशी से उन्होंने उनकी भी सेवा की और पिछले साल दिसंबर में उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी। उनकी कोई औलाद नहीं थी। एक गोद लिया बेटा था और इसी के दो बच्चे हैं शाह ज़ैब और शाह ज़ील जो उनके पास लाहौर में रहते हैं उन में से एक वही बेटा था जो उनके साथ जुम्अ: पर जाते हुए था। उनके एक भाई इलियास साहिब बर्मिंघम में रहते हैं। यह कहते हैं कि बहुत शफीक भाई थे। छोटे भाइयों को बड़े भाई की तरह नहीं बल्कि पिता की तरह ख्याल रखा। हमारे प्रशिक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नमाज़ और उस का अनुवाद ,कुरआन सब कुछ आप से हमने सीखा। अपने छोटे भाइयों का विचार रखते थे। शिक्षा में भी आप हमेशा मदद और मार्गदर्शन करते। स्कूल जाकर हमारे शिक्षकों को मिलते और हमारे बारे में चिंतित रहते। जमाअत के कार्यक्रमों में बड़े आयोजन से हमें तैयार करके साथ ले जाते। विभिन्न शैक्षिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए तैयार करते हैं। नमाज़ बाजमाअत के लिए साथ लेकर जाते हैं। (अगर बड़े भाई अपने छोटे भाइयों को और माता पिता भी बच्चों को इसी तरह साथ ले कर जाने लगें तो हमारी मस्जिदों की हाज़री कई गुना बढ़ सकती है) और फिर कहते हैं कि जमाअत की डयूटियों पर हमेशा पहले हमें लेकर जाते।

शहीद मरहूम ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि के ज़माना में ख़बाव देखा था। उनके भाई कहते हैं आप की शहादत के दो दिन बाद अचानक मुझे वह सपना याद आया। इस ख़वाब शहीद मरहूम ने इस प्रकार वर्णन किया था। कहते हैं कि मैंने देखा कि हमारे मोहल्ले की एक मस्जिद जो कि ग़ैर जमाअत की है वहाँ घोषणा हो रही है कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि वफात पा गए हैं और मैंने देखा कि घर के लेटर बॉक्स में एक चाकू पड़ा हुआ है तब उन्होंने व्याख्या की कि इस का यह अर्थ था कि चाकू देखने से अभिप्राय जमाअत को कुरबानी देनी पड़ेंगी और हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि की मृत्यु की घोषणा का यह मतलब हो सकता है कि उनके कार्यकाल में जमाअत इतनी तरक्की करेगी कि मृत्यु का ऐलान की स्पीकरों पर घोषणा होगी। तो उनके विचार में तो यह बहरहाल एम.टी.ऐ द्वारा जो घोषणा होती रही इस लिहाज से वह सपना भी पूरा हो गया और उन्होंने चाकू जो देखा था वह उनकी शहादत की ओर इशारा था इन के भाई ने यह व्याख्या की है और यही व्याख्या सही लगती है कि शहादत की ओर इशारा था वह भी हो गई। कहते हैं कि हमारे भाई हम से आगे बढ़ गए। परिवार का नाम रोशन किया। शहादत के स्थान को पाकर परिवार के पहले शहीद बनकर हम सभी के लिए हमेशा के लिए उदाहरण छोड़ गए। अल्लाह तआला उनके स्तर बढ़ाए। उनके छह भाई और एक बहन है जो लगभग सारे बाहर ही हैं।

दूसरे मरहूम जिनका उल्लेख करना है वह आदरणीय एच नासिरुद्दीन साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज ईस्ट गोदावरी भारत हैं। 7 अप्रैल 2017 को गोदावरी नदी में डूब जाने से 42 साल की उम्र में वफात गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। दुर्घटना के दिन आप आदरणीय अमीर साहिब सिकंदराबाद और जमाअत के दास्तों के साथ सामूहिक वानगल पौड़ी जमाअत में नमाज़े फज्र के बाद नदी पर गए। अच्छी तैराकी जानते थे। वहाँ कुछ मित्रों के साथ तैराकी के दौरान लापता हो गए फिर मछुआरों की मदद से एक घंटा खोज के बाद नदी के किनारे उनकी लाश मिली। स्वर्गीय के पिता आदरणीय ए शाहिदुल हमीद अपने क्षेत्र कावाशीरी केरल

के पहले अहमदी थे। उन्हीं के द्वारा वहाँ जमाअत की स्थापना हुई जबकि आप की माँ सुश्री चैलेकरह की प्रारंभिक अहमदियों में से थीं। मरहूम 2000 ई में कादियान से पास होकर प्रदेश आंध्र:और तेलंगाना में विभिन्न स्थानों पर सफल मुबल्लिग़ के रूप में सेवा करते रहे। चिनटा कुंटा की बड़ी जमाअत में भी सेवा की तौफ़ीक़ पाई। आप बहुत हिकमत से प्रशिक्षण करके अपने अधीन जमाअतों को संभाल रहे थे। मृत्यु के समय इन्चार्ज ज़िला ईस्ट गोदावरी के रूप में तैनात थे। उनकी पत्नी कहती हैं कि कुछ ऐसे स्थानों पर भी रहना पड़ा जहां केवल जमाअत का केंद्र स्थापित था वहाँ पर पत्नी और बच्चों को लेकर नमाज़ पढ़ा कर दर्स देते थे और यह सिलसिला मृत्यु से एक दिन पहले तक जारी रखा।

मुरबियों के लिए इसमें सबक है कि अगर जमाअतें दूर हैं कोई नहीं भी आता तब भी नमाज़ें जमाअत से होनी चाहिए चाहे अपने घर वालों के साथ पढ़ें।

फिर उनकी पत्नी बताती हैं कि जब आप कामा रेड्डी में थे तो वहाँ लीफलेटस बांटने पर आप का विरोध बढ़ गया पकड़े गए विरोधियों ने ख़ूब पीटा लेकिन आप केवल अल्लाह तआला की कृपा से बाल-बाल बच गए। इसके बाद पत्नी कहती हैं कि मैंने उन्हें कहा कि यहां तो बड़ी ख़तरनाक स्थिति है दुश्मन हैं विरोधी हैं केरल में तबादला का अनुरोध कर दें क्योंकि आप की दुश्मनी बहुत ज्यादा बढ़ गई है तो कहने लगे कि हम तो तबादला करवा कर चले जाएंगे और मैं दुश्मनी का संदर्भ दे कर केंद्र में लिखूँगा केंद्र शायद तबादला कर दे हम चले गए लेकिन यहां के रहने वाले स्थानीय अहमदियों का क्या होगा वह कहां तबादला करेंगे? उनके लिए तो दुश्मनी इसी तरह स्थापित है। तो कहते हैं विरोध से डर जाना यह सही बात नहीं है इसलिए हमें अपने वक्फ के अहद को पूरा करना चाहिए। हम वक्फ कर के आए हैं और जैसे भी हालात हैं हमें यहाँ रहना है और हमें रहना चाहिए। यही कहा करते थे अगर शहादत की तौफ़ीक़ मिल गई तो फिर इस से बड़ा इनाम क्या है और इसलिए हमें यही रहना है।

इसी तरह सादगी का यह हाल था कि पत्नी बताती हैं कि कोई फर्नीचर कभी नहीं खरीदा था। घर में कोई व्यक्तिगत फर्नीचर नहीं था और हमेशा कहा करते थे कि हम वक्फे ज़िन्दगी हैं जमाअत जहां कहती है हमें वहाँ जाना है इसलिए कहीं कभी फर्नीचर या घर का सामान जो है हमारे शीघ्र तबादला में रोक न बन जाए जो सुविधा जमाअत ने दी हुई है उसी पर हम ने गुज़ारा करना है और उसी पर संतोष करना चाहिए। यह भी एक उदाहरण है एक वक्फ ज़िन्दगी के लिए।

पिछले साल अमला पुरम में तबादला हुआ था वहाँ बच्चों को कुरआन शरीफ पढ़ाने के लिए इतने पाबन्द थे कि एक किलोमीटर प्रतिदिन पैदल या साइकिल पर जाकर लोगों को कुरआन पढ़ा कर आते थे। यह भी एक उदाहरण है मुबल्लिग़ों मुरब्बियों के लिए।

फिर उनकी पत्नी ने कहा कि उन में आतिथ्य सेवा की बड़ी खूबी थी। कहती हैं अगर बच्चों की छुट्टियों के अवसर पर या स्कूल की छुट्टियों के अवसर पर केरल आने की वजह से घर में ना होती और अतिथि आ जाते तो कभी उन्होंने परेशानी नहीं दिखाई। हमेशा ख़ुद ही पका कर मेहमानों को खिलाया करते थे। शहादत की भी उनमें बहुत तमन्ना थी पहले ज़िक्र हुआ है। उन्होंने कहा कि मैंने बार बार हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो और अपने स्वर्गीय पिता को सपना में देखा है और मेरे पिता मुझे इशारा करते हैं बुला रहे हैं। बहरहाल एक रंग में उनकी शहादत ऐसी भी हो गई धर्म की सेवा के लिए गए हुए थे और वहीं धार्मिक दौरे के दौरान ही उनकी आकस्मिक मृत्यु हुई। यह भी एक प्रकार की शहादत है। बड़ा तहज्जुद पढ़ने वाले, मिलनसार, तब्लीग़ी क्षेत्र में एक निडर मुजाहिद थे। कई बार विरोधियों ने उन्हें हिरासत में रख कर पीटा। मैं जलसा की तकरीर में जो घटनाएं सुनाता हों इस में भी मैंने इन की मारपीट की घटनाई सुनाई था जो भयानक रूप से मौलवियों ने उन्हें मारा था। इनके पीछे रहने वालों में बुजुर्ग मां हैं,पत्नी हैं और दो बेटे हैं। उनके दो बड़े भाई हैं। एच सुलैमान साहिब अमीर ज़िला पाल घाट केरला और एच शम्सुद्दीन साहिब नज़ारत नश्रो इशाअत कादियान के मलयालम विभाग में इस समय सेवा तौफ़ीक़ पा रहे हैं।

उनके साथ सेवा की तौफ़ीक़ पाने वाले मुबल्लिग़ नवीदुल फतह शाहिद साहिब कहते हैं कि मौलाना एच नासिरुद्दीन साहिब केरल के रहने वाले थे। लगभग अठारह साल से आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में सेवा कर रहे थे। कहते हैं कि अक्सर इस कारण से अर्थात एक ही क्षेत्र में रहने की वजह से मीटिंग होती थीं। मीटिंग में बहुत विनम्रता से बैठते थे। सिलसिला अहमदिया की तरक्की के लिए हर काम करने के लिए तैय्यार रहते थे। बहुत ही प्यार करने वाले थे। सच्चे आलिम थे प्रतिदिन तहज्जुद पढ़ते थे। हर रोज़ नियमित दर्स और प्रशिक्षण देते थे। दफतरी काम के लिए हर दिन विशेष समय ज़रूर रखा करते थे। बड़ों का सम्मान उन की एक विशेष विशेषता थी। छोटों से हुस्ने सुलूक भी एक विशेष विशेषती थी। हर रोज़ नियमित बाहर निकलते। कोई डर नहीं था विरोधी हैं तो क्या करेंगे और इस वजह से ग़ैर अहमदियों में भी उनका बड़ा व्यापक क्षेत्र था क्योंकि उनसे भी बड़ी प्रसन्नता से मिलते थे। बड़े हर दिल अज़ीज़ थे। कहते हैं मैंने कभी उनके माथे पर शिकन नहीं देखी। कभी ग़ुस्सा नहीं देखा। अपने साथी मुअल्लेमीन से भी बड़ा सम्मान करते हमेशा उनका ख्याल रखते और प्रत्येक से ऐसा प्रेम था कि हर कोई जो उनसे मिलता था वह उन पर फिदा हो जाता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का बड़ा व्यवस्थित नियमित अध्ययन करते थे उनका और उस का नियमित आयोजन करते थे उसके लिए उन्होंने विशेष समय रखा था और यह भी हर मुबल्लिग़ और मुरब्बी के लिए एक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक शिक्षा है।

कुरआन मजीद की तिलावत से कभी लापरवाह नहीं रहते। डायरी हर दिन नियमित लिखते और हमेशा यह आदत रही कि ख़िलाफत से जो बात कही जाए उसे ध्यान से सुनना है। हमेशा ख़ुत्बा को बड़ा ध्यान से सुनते और फिर न केवल सुनते बल्कि यह कोशिश होती है कि पूरी तरह पालन करना है कोई अर्थ नहीं करना बल्कि हर एक शब्द का पालन करने की कोशिश करते थे और यह भी एक बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है वाकफीन ज़िन्दगी के लिए।

ख़िलाफत से बेहद प्यार करने वाले थे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से प्रेम और अपार मुहब्बत थी और यह कहते हैं कि ऐसी विशेषताएं थीं जो उनके अस्तित्व में स्पष्ट दिखती थीं। विरोधियों ने कामा रेड्डी में बिलाल मस्जिद में ले जाकर उन्हें बहुत मारा और धैर्य से मार खाते रहे और पीछे नहीं हटे। दूसरे मुरब्बी साहिब यह कहते हैं कि मार खाकर जब अस्पताल में भर्ती हुए। पुलिस द्वारा उन्हें निकलवाया गया था तो उस समय अस्पताल जाकर मैं उन्हें मिला और देखा कि ज़ख्मों से चूर हैं और पट्टियों में लिपटे हुए हैं लेकिन चेहरे पर एक आध्यात्मिक आन्नद था। बड़े ख़ुश थे और ख़ुद ही पूरी घटना सुनाने लगे कि विरोधी पूछते थे कि मिर्ज़ा गुलाम अहमद ने किया दावा किया है। यह बताते कि ज़िल्ली नबुव्वत का दावा किया है तब विरोधी और अधिक मारते। मार-मार कर जब अधमरा कर देते तो पूछते कि वह ज़िल्ली नबुव्वत क्या है तो यह कहते कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रेम में समर्पित होकर जो नबुव्वत मिलती है वही आप की नबुव्वत थी। फिर विरोधी मारते। बहरहाल यह बड़ी शुक्र से यह घटनाएं सुनाते कि अल्लाह तआला के धर्म की सेवा में यह तौफीक भी मुझे मिली कि बहुत अधिक मारें खाईं और यह लिखने वाले जो मुरब्बी हैं वह कहते हैं जब उनका तबादला होने लगा तो मुझे कहते हैं कि मेरा तो यहाँ से तबादला हो रहा है लेकिन विरोध के जगह पर जाकर आप हिक्मत से बहुत अधिक काम करें और इसका आप को वहाँ बहुत ज्यादा अवसर होगा और फिर विरोध के बारे में समझाते रहे कि कैसे विरोध में तब्लीग़ करनी है। मानो कि अपने बाद आने वालों की भी हिम्मत बढ़ाई कि डरना नहीं अहमदियत के संदेश को पहुंचाना है तो हिम्मत से पहुंचाना है। एक मुअल्लिम वज़ीर साहिब हैं वह कहते हैं कि मैंने हमेशा उन्हें तहज्जुद की नमाज़ पढ़ते हुए बहुत अत्यंत विनम्रता और विनय से दैनिक नमाज़ पढ़ने वाले वाला, बहुत हंसमुख और कर्म करने वाला, ख़िलाफत से विशेष प्रेम करने वाला, जमाअत के साथ नमाज़ का विशेष ख़ास ख़्याल रखते अच्छे मेहमान नवाज़ सादगी पसंद व्यर्थ ख़र्चों से बचने वाले थे।

फिर यह लिखते हैं कि महोदय को अध्ययन बड़ा शौक था पहले भी उल्लेख हो चुका है। कोई सवाल पूछा जाए तो अच्छे रंग में जवाब देते थे। अक्सर जब भी किसी कार्यक्रम या मज्लिस में विशेष रूप से यात्रा के दौरान ख़ुद्दाम के साथ बैठते तो जमाअत का ज़िक्र और ईमान वर्धक घटनाएं सुनाया करते थे। प्रत्येक से उच्च नैतिकता से पेश आते थे जिसकी वजह से हर कोई आप के साथ रहना पसंद करता था और यह कहते हैं कि जब उन्हें एक बार कामारेड्डी में लीफ लेटस बांटने की वजह से विरोधियों ने इन को मारने का पलान बनाया। 20 फरवरी मुस्लेह मौऊद दिवस का जलसा था। यह नमाज़ सेन्टर पहुंच गए थे। इसी दौरान सौ लोगों पर आधारित ग़ैर अहमदियों का प्रतिनिधिमंडल उनकी तलाश में निकला लेकिन क्योंकि यह मस्जिद पहले पहुँच चुके थे उन्हें रास्ते में न मिला। उन विरोद्धी मौलवियों ने यह तरीका निकाला कि मुअल्लिम सिलसिला मोहम्मद उमर और उनकी पत्नी और दो बच्चे नमाज़ सेन्टर जलसा में भाग लेने के लिए जा रहे थे तो उन्होंने उन्हें रास्ते

में रोक लिया और कहा कि जब तक एच नासिरुद्दीन सामने नहीं आएगा हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। उन्हें जब पता लगा तो यह तुरंत वहां पहुंचे और उन्हें कहा कि मैं नासिरुद्दीन हूँ। इसलिए मुअल्लिम साहिब और उनकी पत्नी बच्चों को तो विरोधियों ने छोड़ दिया और उन्हें मारते हुए ले गए और सब ने बहुत अधिक मारा। अंत में पुलिस द्वारा फिर उनकी वसूली हुई और यही ज़ोर था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा से तुम इन्कार कर दो और उन्हें झूठा कहो। अल्लाह तआला उनके स्तर भी बढ़ाए और उनके बच्चों को भी धैर्य और साहस दे।

अगला उल्लेख आदरणीया साहिबज़ादी अमतुल वहीद बेगम साहिबा का है जो साहिबज़ादा मिर्ज़ा ख़ुर्शीद अहमद साहिब की पत्नी थीं। 10 अप्रैल 2017 ई को रात दस बजे लगभग 82 साल की उम्र में उनकी वफात हुई है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

यह हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब की सबसे छोटी बेटी थीं और मेरी फूफी भी थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पोती और हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान के नवासी थीं। आप को बहश्ती मकबरा रबवा में दफन किया गया है। दो बार बड़ी ख़तरनाक बीमारियों से यह गुज़री हैं लेकिन बड़े धैर्य और मनोबल और धीरज से बीमारी का मुकाबला किया और डॉक्टर नूरी साहिब ने उनके बारे में लिखा कि लगभग पिछले दो तहाई से जब से आप बीमार थीं। मेरे अवलोकन में आप नेकी का एक उच्च नमूना थीं। कहते हैं बीमारी को बहुत धैर्य और हिम्मत से सहन किया। कैंसर का रोग था और अंतिम दिनों में तो बामारी खतरनाक हद तक चली जाती थी। कहते यह बामारी तो शारीरिक और मानसिक दोनों दृष्टि से ख़तरनाक होती है और फिर इलाज भी बड़ा कष्ट दायक होता है लेकिन इसके बावजूद आप ने अल्लाह तआला की दी गई शक्ति और धैर्य से इस बीमारी को अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हारिज नहीं होने दिया और बड़ी हिम्मत और धैर्य से इस बीमारी का मुकाबला किया और डॉक्टर साहिब लिखते हैं कि आप हंसते हुए और निडर होकर सब काम करती रहती थीं और अल्लाह तआला की ख़ुशी में ख़ुश थीं। अपनी बीमारी के अंतिम दिनों तक भी घर संभाला हुआ था और उसके साथ अपने जीवन का भी विचार रखने वाली थीं। मियां के साथ भी एक आदर्श संबंध था। और खुद भी बीमार थीं लेकिन जब उनके पति आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब की इनजो प्लास्ट हुई है तो अपनी बीमारी भूल कर उनकी सेवा भी करती रहीं, ध्यान भी रखती रहीं।

आतिथ्य की विशेषता भी उनमें बहुत महत्त्वपूर्ण था। किसी भी समय कोई आ जाता तो सेवा करतीं और ग़ैर अतिथि भी बड़े उनके यहां आते थे, जलसा के दिनों में भी और शूरा आदि पर भी तो हमेशा बहुत ज्यादा उन्होंने उनका ख्याल रखा। बीमारी के बाद यहां लंदन भी दो बार आई हैं मुझे मिली हैं। 2005 ई में कादियान में मुलाकात हुई थी पहली बार मेरे साथ ख़िलाफत के बाद फिर यहाँ जब आई हैं तब भी और बड़ी श्रद्धा और बैअत का संबंध था उनका खिलाफत के साथ। बावजूद बड़ा रिश्ता होने के, बड़ी आयु होने के बहुत विनम्रता से मिलती थीं। हमारी माँ के साथ उन का नंद भाभी का रिश्ता था लेकिन आयु की दृष्टि से हज़रत मिर्जा शरीफ अहमद साहिब की सबसे छोटी बेटी थीं और मेरी सबसे बड़ी बहन और यह लगभग हमउम्र ही थीं और इस लिहाज़ से मेरी माँ ने हमेशा इन से अपने बच्चों की तरह व्यवहार किया और उन्होंने भी कभी उन्हें भाभी नहीं समझा बल्कि हमेशा मैंने देखा है कि बड़ा मान-सम्मान था और उन्होंने मेरी माँ को हमेशा बड़ा बुज़ुर्ग माना और एक ऐसा संबंध था जो आदर्श था।

उनका निकाह 26 दिसंबर 1955 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने पढ़ाया था और उस समय उनके साथ हज़रत सैयद मीर महमूद अहमद का निकाह भी हुआ हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी की बेटी साहिबज़ादी अमतुल मतीन के साथ फिर चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान की एक बेटी का निकाह भी एजाज़ुल हक साहिब के साथ हुआ। तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने 26 दिसंबर को जलसा के उद्घाटन से पहले कहा कि उद्घाटन के भाषण और दुआ से पहले कुछ निकाहों की घोषणा करूंगा। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने फरमाया कि सामान्य तरीका तो यही है कि निकाह जलसा के बाद 29 दिसम्बर को हुआ करते हैं लेकिन इन निकाहों में कुछ अपवाद हैं एक तो यह कहते हैं एक है कि मेरी अपनी लड़की अमतुल मतीन का है जो मीर महमूद अहमद साहिब पुत्र मीर इसहाक साहिब से करार पाया है दूसरा चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान साहिब की लड़की है और तीसरा अमतुल वहीद बेगम पुत्री मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब का निकाह जो मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद पुत्र मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद से क़रार पाया है और मिर्जा खुर्शीद अहमद साहिब वाक्फ ज़िन्दगी भी हैं और फिर आगे हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फरमाया कि अब यह शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और वक्फ करेंगे। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने दुआ के शब्द कहे और फरमाया अल्लाह तआला इन सारे निकाहों को बरकत वाला करे और सांसारिक रूप में और भविष्य में सिलसिला की ताकत और शक्ति की बुनियाद इन निकाहों द्वारा पैदा हो।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद जिल्द 3 पृष्ठ 672-675-676)

अल्लाह तआला के फज़ल से अल्लाह तआला ने आप को छह बेटे प्रदान किए जिन में से चार बेटे वाक्फ ज़िन्दगी हैं। दो डॉक्टर फज़ले उम्र अस्पताल में काम कर रहे हैं। एक पी.एच.डी डॉक्टर हैं नज़ारत तालीम में हैं और एक वकील हैं जो सदर अंजुमन अहमदिया में कानूनी सलाहकार के दफतर में हैं।

इनकी लजना की सेवाओं का समय भी लगभग 29 साल तक फैला है जिसमें सचिव उद्योग व व्यापार और नायब सदर अव्वल रहीं और सचिव उद्योग व व्यापार के रूप में जो उन्होंने सेवाए की थीं इस में उन का तो स्वभाव बड़ा अच्छा था और ग़रीबों से काम करवाती थीं। हाथ से काम करवाना कढ़ाई या सिलाई और एक तो उन्हें मज़दूरी मिल जाती थी दूसरे प्रदर्शन में हमेशा रबवा की लजना की पर्याप्त आय हो जाया करती थीं। अपने उच्च अधिकारी की आज्ञाकारिता चाहे उस से क्या संबंध है और क्या उम्र का अंतर है अपार थी। मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि दो साल जब वह सदर लजना रबवा रही हैं तो यह सचिव उद्योग व व्यापार और उपाध्यक्ष के रूप में उनके साथ काम करती रहें और हमेशा बड़ी ख़ुशदिली और बड़ी विनम्रता बड़ी आज्ञाकारिता से काम किया और जो भी उनके उत्तरदायित्व का काम लगाया गया उसे उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से आयोजन किया। उनके पति आदरणीय मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब कहते हैं कि एक वाक्फे ज़िन्दगी की पत्नी होने का हक़ अदा किया। मेरे से कभी कोई मांग नहीं की बच्चों के प्रशिक्षण का ख्याल रखा और यही प्रशिक्षण का नतीजा है कि अल्लाह तआला की कृपा से छह बेटों में से चार वक्फ जिन्दगी हैं। और फिर अपने बच्चों के साथ घर में मौजूद कर्मचारियों के बच्चों को भी बड़े उत्तम रूप में रखा अगर कोई कुरआन शरीफ न पढ़ा हुआ होता तो उसे कुरआन पढ़ातीं बच्चों के साथ कर्मचारियों के बच्चों को भी कुरआन पढ़ाया। बड़ी संख्या में ऐसे बच्चे हैं जिन्हें उनकी उम्र के अनुसार पहले कुरआन नाज़रह और फिर अनुवाद के साथ पढ़ाया।

यह लिखते हैं कि कॉलेज के दिनों में उन्होंने जब वह पढ़ रही थीं। सपने में देखा कि मियां अब्दुर्रहमान साहिब उनके मामू मालेर कोटला के थे बड़े सुन्दर और दर्शनीय सोने के कंगन किसी महिला के हाथ उन के लिए भिजवाए हैं और साथ कहा कि "65 ते 82" (65 और 82) वह महिला आप को कंगन देते हुए कहती है कि 65 और 82। आप पुष्टि के लिए फिर से पूछती हैं कि 65 और 82? तो कहते हैं इस बारे में मुझे तब समझ आई जब 1965 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी की मृत्यु हुई और 1982 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस की।

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

उनके बेटे प्रिय अदील लिखते हैं कि जलसा सालाना के अवसर पर 100 से अधिक मेहमान होते थे उनकी आतिथ्य बड़ी खुशदिली से करतीं और जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि ने हिजरत की है तब उनकी यात्रा के लिए चाय और अन्य चीज़ों का प्रबंधन उन्होंने किया और अपने हाथ से अपनी निगरानी में कुछ ऐसी चीज़ें जो उन्हें पसंद थीं बना कर भिजवाया करती थीं और इसी तरह वही व्यवहार जो हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि के साथ था उसी तरह मेरे साथ रखा और मुझे भी वह विशेष हलवा जो उन का होता था बना कर भेजा करती थीं अपने हाथ से अपनी निगरानी में। बड़ा मान और सम्मान था। अपनी माँ की बड़ी सेवा की। अपने सास ससुर की बड़ी सेवा की। अपनी ननदों को छोटी बेटियों की तरह रखा। तिलावत कुरआन और नमाज़ की बड़ी पाबन्द थीं और बच्चों को भी इसी तरह पाबन्द रखा और मस्जिद भिजवाया करती थीं और बच्चों को फिर नमाज़ फज्र के बाद दर्स के लिए बिठातीं उनसे कहतीं तिलावत करो। ग़रीबों का ख्याल रखना कर्मचारियों का ख्याल रखना बहुत अधिक था और मेरे से बेतकल्लुफी थी मैंने पहले भी बताया कि एक घर में रहने की वजह से तो ख़िलाफत के बाद उनके बेटे लिखते हैं उन्होंने कहा कि पहले तो काम ज़बरदस्ती कुछ करवा लिया करती थीं। अब मेरे काम जो मेरे ज़िम्मे थे अर्थात जो अंजाम दिया करता था उनके काम वे कैसे होंगे या उनकी ज़मीन के मामले थे तो बहरहाल उन्हें मैंने तसल्ली दी उसके बाद से कभी उन्होंने किसी प्रकार की मांग नहीं की और हमेशा जो कहता था उसके अनुसार कार्य करती रहीं और प्रसन्न होती रहीं।

उनकी एक नंद जो मेरी भाभी भी हैं वे लिखती हैं कि हमारा उनसे संबंध बिल्कुल वैसा ही था जैसे एक माँ का अपनी बेटियों से होता था। माता जी की मृत्यु के बाद हम सबका बहुत ख्याल रखा। हमारी शादी में जोड़े आभूषण दहेज आदि के सारे इंतजाम ख़ुद करवाए जैसे एक माँ अपनी बेटी के लिए करती है शादी के बाद आज तक हर ईद पर ईदी भिजवाती जैसे माताएं अपनी बेटियों को भिजवाती हैं। कई गरीब बच्चियों को अपने घर में पाला और उनकी हर तरह से धार्मिक और दुनियावी शिक्षा व प्रशिक्षण का ख्याल रखा। एक नौकरानी की बच्ची थी जो पाली थी। ख़ुद पाली और उसकी शादी पर यह कहते हैं कि हम सभी को संदेश भेजा अपनी ननदों को कि तुम उसकी शादी में शामिल न हुई तो मैं तुम लोगों के बच्चों की शादी में शामिल नहीं होंगी। ग़रीबों से ऐसे निकटता व्यक्त करती थीं। उनकी एक छोटी ननद लिखती हैं कि मैंने एक बार उनसे पूछा कि कितनी उम्र से आप ने तहज्जुद पढ़नी शुरू की थी उन्होंने जवाब नहीं दिया मुझे टालना चाहा लेकिन कहती हैं मेरे बार बार के आग्रह पर उन्होंने बताया कि बारह साल की उम्र से नियमित तहज्जुद पढ़ रही हूँ। इसी तरह कई बच्चियों के दहेज और शिक्षा का खर्च वहन करती थीं और लजना का जो शिल्प का फण्ड होता था इसमें भी दिलवाया करती थीं। कुछ की रौनकें ऐसी होती थीं जहां बच्चियों की शादी की रौनक है कोई पूछने वाला नहीं। ग़रीब बच्ची है तो उन्होंने अपने घर से भोजन करवाने का प्रावधान किया और ख़िलाफत से ईमानदारी की एक घटना उनके पति खुर्शीद अहमद साहिब के भांजे लिखते हैं। कहते हैं कि एक बार एक शहद की शीशी पड़ी थी मैंने कहा मुझे दे दें तो उन्होंने कहा कि यह तो मुझे उस ने भेजी है यह तो नहीं दे सकती। ऐसी एक और शीशी पड़ी है वह तुम ले लो।

अल्लाह तआला के फज़ल से छह बहुएँ थीं प्रत्येक से उनका अच्छा व्यवहार था और प्रत्येक को बेटियों की तरह रखा हुआ था और उनकी छोटी बहू यहाँ लंदन में डॉक्टर हामिद अल्लाह साहिब हैं उनकी बेटी हैं, आजकल उनकी पत्नी भी बीमार हैं उनकी वजह से उनकी इस बहू को यहां लंदन आना पड़ा तो उन्होंने कहा तुम बेफिक्र होकर जाना बावजूद इसके कि ख़ुद बीमार थीं उन्होंने कहा तुम जाओ अपनी माँ का ध्यान रखो यहाँ बच्चे छोड़ जाओ बच्चे संभाल लूंगी। अत्यंत कष्ट में भी बड़े धैर्य से उन्होंने अपना हर काम किया है।

मेरी छोटी बहन लिखती हैं कि कार्यकर्ताओं से जब काम करातीं तो बड़े आराम से करातीं और प्रदर्शन की डयूटियाँ में कई बार नुकसान भी हो जाता तो ज्यादा सख्ती नहीं करती थीं। बड़े धैर्य के साथ काम करती थीं और इसलिए लजना की सदस्या उनके साथ काम करना पसंद करती थीं। इस्लामी मामलों में भी बहुत अधिक परफेक्ट थीं। किसी काम करने वाली को असुविधा होती तो उसे दूर करने के लिए तुरंत कोशिश करतीं।

मेरी छोटी बहन अमतुल कुद्दूस लिखती हैं कि इंसान के कर्म में कमी बेशी तो होती रहती है लेकिन उनकी घुट्टी में यह बात शामिल थी कि कुरआन और हदीस के साथ संबंध था। नेकी तो मानो उनकी प्रकृति में सम्मिलित थी। जब देखतीं कि हमारी परंपराओं और शिक्षा के ख़िलाफ बात हुई है तो ख़ुलकर उसके ख़िलाफ बोलती थीं।

सबसे छोटी होने के कारण बचपन से बहुत लाडली थीं लेकिन बहुत अधिक नम्रता थी और हमेशा विनम्रता से प्रत्येक से मिलती थीं। मेरी बड़ी बहन अमर्तुरऊफ ने लिखा ने पेंशन के बाद मॉडल टाउन लाहौर में जब हम हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब के साथ रहते थे उस समय हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब ने सबको एकत्रित कर के नियमित कुरआन और हदीस पढ़ाते थे तो कहती हैं हमारी फूफी अमतुल वहीद जो वफात पा गई हैं उन्हें भी उस समय से ऐसी आदत लगी और फिर विभिन्न बच्चों को और अपने बच्चों को पढ़ाया और एक बच्चे की ज़बान की समस्या थी तो घंटों बैठ कर दोहरा दोहरा कर कुरआन उसे सिखाया और अब वह अल्लाह की कृपा से बड़ा कोई मुद्दा नहीं रहा और बोलने वाला बच्चा है। यह लिखती हैं मेरी बहन ने मैट्रिक के बाद एफ.ए रबवा से किया। तहज्जुद के बाद अपनी पढ़ाई शुरू कर देती थीं और नमाज़ की ओर भी हमेशा ध्यान रहता था।

इसी तरह बाकी लोगों ने भी विभिन्न विशेषताऐं लिखी हैं उनके बेटे ने फिर लिखा कि ख़िलाफत से पहले तो जो आप का संबंध था वह और था और ख़िलाफत के बाद कहने लगें कि भतीजे का रिश्ता ख़त्म हो गया अब केवल ख़िलाफत का रिश्ता बाकी रह गया है। यहां भी जब आती थीं तो मिलने आती थीं कई बार बैठी होती थीं तो एकदम खड़ी हो जाती थीं मैंने कहा आप बीमार हैं बैठी रहा करें मेरी पत्नी ने भी कहा लेकिन तुरंत खड़ी हो जाती थीं। अल्लाह तआला पर बड़ा भरोसा था एक बार उनके छोटे बेटे की शादी बड़े से पहले हो गई। बड़े के लिए उन्होंने घर में अपना हिस्सा बनाया था तो उनके पति ने कहा कि वह भाग छोटे को दे दें और वर्तमान में तौफ़ीक़ नहीं है। उन्होंने कहा कि नहीं, जो बड़े के लिए बनाया है वह बड़े के लिए ही है। अल्लाह तआला प्रबंध कर देगा और एक दिन संयोग से या अल्लाह की तकदीर थी कुरआन पढ़ते हुए उन्होंने एक आयत पर अपना ध्यान केंद्रित किया और अपने पति को कहा कि अल्लाह तआला की इस आयत से मैं समझती हूं कि अल्लाह तआला मेरी ज़रूरत पूरी कर देगा तो उस ज़माने में सस्ता ज़माना था उन्होंने कुछ ब्रांड बांड लिए हुए थे और अल्लाह तआला की कृपा से उन्हें एक लाख रुपए का बांड पुरस्कार निकला जिसकी वजह से उन्होंने वह घर बना दिया।

फिर यह बेटा लिखता है कि जब हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबि की मृत्यु की रिपोर्ट आई तो हम सब लोग नमाज़ के लिए मस्जिद गए हुए थे और हमारी अम्मी भी बड़े सदमे में थीं तब मेरी बड़ी भाभी ने ऊंचा रोना शुरू किया तो अम्मी ने उसे कहा कि चुप हो जाओ इस समय जमाअत पर परीक्षा का समय है और यह दुआ का समय है इस समय दुआ करो। यह कहते हैं कि मैं नौ साल का था हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस की जब मृत्यु हुई है। बच्चा था तो किसी बात पर मेरी हंसी निकल गई तो मुझे बड़े जोर से डांटा कि तुम चुप करो तुम्हें पता नहीं कि क्या स्थिति है इस समय जमाअत की। बचपन से ही इहसास दिला देती थीं कि जमाअत का महत्त्व क्या है। इसी तरह बच्चों को विभिन्न सूरतें याद करवाती रहीं।

उनके घर में ही पली एक बच्ची यह कहती है जिसके पति भी दफतर निजी सचिव में कार्यकर्ता हैं कि चार-पांच साल की उम्र से आप के घर में हूँ। आप ने मुझे पढ़ाया हर लिहाज़ से मेरा प्रशिक्षण किया मेरी शादी करवाई। शादी के बाद जब कोई काम होता मुझे अपने घर बुला लेती। कहती हैं एक बार मेरे घर आएं तो एक पुरानी शैली का सोफा पड़ा था। उन्होंने कहा कि यह कहां से आया है बताया कि किसी पड़ोसी ने दिया है उन्होंने कहा कि यह सोफा उठवाओ और नया सोफा तुरंत बनवा कर दिया।

यह स्त्री कहती हैं कि मेरे बेटे की पढ़ाई का बड़ा ख्याल रखा और अंतिम बीमारी के दिनों में भी बेटे की शादी के लिए और सब कुछ बारीकियों से देखती थीं।

इसी तरह दूध के रिश्तों का बड़ा ध्यान रखने वाली थीं उनकी दूध माता जो उनको दूध पिलाने वाली थीं उनका का बेटा स्विट्जरलैंड में है वह कहते हैं कि मेरे पिता की परेशानी में और हर संकट में उनका बड़ा ध्यान रखा। इसी तरह उनकी दूध बहन न थीं उनके प्रिय ने मुझे लिखा कि बहुत विनम्रता से इस की बीमारी के दिनों में इसका ख्याल रखा। अत: उनमें यह बहुत सारे गुण थे। अल्लाह तआला उनके बच्चों में भी यह गुण जारी करे और ख़िलाफत से वफ़ा का संबंध उन का हो और अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा फरमाए।

नमाज़ के बाद बल्कि तीनों मरहूमीन जिन का उल्लेख किया है उन का मैं नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 18 May 2017 Issue No. 20

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

पृष्ठ 2 का शेष

लड़ने के लिए शीर्ष रखें। या फिर वे अभी अभी सीरिया में पैदा हुए हालात को देखें जहां रूस और अमेरिका खुल्लम खुल्ला एक दूसरे के खिलाफ बातें कर रहे हैं? या फिर बिल्कुल हाल ही में यमन और अमेरिका में होने वाले विवाद को लें?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मेरे नज़दीक हमारे सामने इस समय सबसे महत्त्वपूर्ण और आवश्यक समस्या दुनिया में शांति का अभाव है और बहुत दु:ख की बात है कि मुस्लिम देश इस दंगे और अस्थिरता का केंद्र बने हुए हैं हालांकि उनके धर्म ने उन्हें शांति की स्थापना के लिए बहुत उच्च शिक्षा दी हैं। उदाहरण के तौर पर कुरआन की सूर: अलमोअमेनून की आयत 9 में अल्लाह तआला फरमाता है कि "वास्तविक मोमिन वे हैं जो कि अपनी अमानतों और पदों का विचार रखते हैं।" सरकारों की चाबियां शासकों के सुपुर्द करना एक बहुत बड़ी अमानत है। हम अक्सर देखते हैं कि देशों के शासक वफादारी और सही न्याय के साथ अपने लोगों की सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं लेकिन खेद के साथ कहना पड़ता है कि अक्सर मामलों में बड़े वादे धरे के धरे रह जाते हैं और उन पर अनुकरण नहीं किया जाता। इसलिए अगर कुरआन की शिक्षाओं पर अनुकरण किया जाता तो सरकार और आम जनता के बीच किसी प्रकार के मतभेद और संघर्ष नज़र न आते। इसी प्रकार अल्लाह तआला कुरआन की सूर: अलमाइदा आयत नंबर 9 में फरमाता है कि अगर एक राष्ट्र या व्यक्ति की दूसरी जाति या व्यक्ति से दुश्मनी हो तब भी इंसाफ का व्यवहार करना चाहिए चाहे कैसी ही स्थितियां हों, इसलिए अल्लाह तआला यही चाहता है । जबकि आज कल के समाज के हर वर्ग में लोगों और सरकारों के बीच इंसाफ के स्थान पर सामाजिक अन्याय और अधिकारों का हनन ही देख रहे हैं। ऐसी असमानता सीधे दुनिया की शांति को प्रभावित कर रही है। फिर कुरआन सूर: अल हुजरात आयत 10 में अल्लाह तआला फरमाता है कि अगर किसी राष्ट्र या क़ौम का एक दूसरे के साथ विवाद हो तो पड़ोसी और दोस्त क़ौम को उनमें सुलह करानी चाहिए। अगर बातचीत के माध्यम से शांति न हो सके तो सभी क़ौमों को अत्याचार करने वाली क़ौम के ख़िलाफ एकजुट होकर इसे रोकना चाहिए। तब अगर ज़ालिम क़ौम न्याय पर स्थापित हो तो फिर उस पर व्यर्थ पाबंदियां नहीं लगानी चाहिए और न ही उसकी उपेक्षा की जानी चाहिए बल्कि इस अच्छाई की वजह से उन लोगों को आगे बढ़ने का मौका दिया जाना चाहिए ताकि स्थायी शांति की स्थापना संभव हो सके।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर हम मुस्लिम देशों के बीच मौजूदा विवाद की समीक्षा करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि तानाशाह के ख़िलाफ एकजुट होने वाले नियम को नज़र अंदाज कर दिया गया है। अगर पड़ोसियों ने अपने निजी हितों को पीछे डाल कर और निष्पक्षता के साथ बीच में पड़ते तो बहुत समय पहले ही यह समस्या हल हो चुकी होती। हालांकि मौजूदा अशांति के कारण केवल इस्लामी देशों में ही नहीं हैं बल्कि हमारे इस ग्लोबल विलेज में रहने वाले अन्य देशों ने भी अशांति में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया अगर दुनिया की बड़ी ताकतों ने हर दौर में न्याय से काम लिया होता तो आज हमें इन उपद्रवों का सामना न करना पड़ता, न आईएस और न ही सीरिया और ईरान के चरमपंथी समूह दिखाई देते। खेद के साथ कहना पड़ता है कि दुनिया की कुछ बड़ी शक्तियों ने शांति की स्थापना के लिए योगदान नहीं बल्कि ऐसी रणनीतियां धारण कीं जिन में इन का अपना हित शामिल था। उदाहरण के रूप में कुछ पश्चिमी देशों की नज़र हमेशा अरब देशों में पाए जाने वाले तेल के भण्डार पर रही है और यह बात बड़े लम्बे समय तक उनकी नीतियों को प्रभावित कर रही है, जिसके परिणाम में इन देशों ने संभावित परिणामों की अनदेखी होई बड़ी संख्या में अरब देशों को हथियार बेच दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया मैं जो भी कह रहा हूँ यह कोई नई और ढकी छुपी बात नहीं बल्कि यह दस्तावेज़ के रूप में मौजूद तथ्य हैं। जैसे 2015 में एमनेस्टी इंटरनेशनल द्वारा प्रकाशित की जाने वाली रिपोर्ट के अनुसार "दशकों की शस्त्र की बेख़ौफ व्यापार ने आइ.एस की उग्रवादी गतिविधियों को जन्म दिया है।" इस रिपोर्ट के अनुसार अक्सर हथियार कि आइ.एस उपयोग कर रही है रूस और अमेरिका में उपयोग होता था। इस के अतिरिक्त आर्म्स कंट्रोल एट एमनेस्टी के एक शोधकर्ता श्री पैट्रिक वेलकन ने यह निष्कर्ष निकाला है कि "नित नया और विभिन्न प्रकार के हथियार कि आइ.एस के उपयोग में है एक स्पष्ट उदाहरण है कि हथियारों की गैर सावधान व्यापार कैसे बड़े पैमाने पर अत्याचार का कारण बनती है।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बेशक यह एक स्थापित तथ्य है कि मुस्लिम देशों के पास ऐसे आधुनिक हथियार बनाने वाली हथियारों की उच्च इकाइयां नहीं हैं जो मध्य पूर्व में इस्तेमाल हो रहे हैं। इसलिए मुसलमान दुनिया में जो युद्ध उपकरण इस्तेमाल किया जा रहा है उसका एक बड़ा हिस्सा बाहर से निर्यात किया जा रहा है। अगर बड़ी शक्तियां हथियार ख़रीदने और बेचने बंद कर देती हैं और इस बात को सुनिश्चित करें कि युद्ध में शामिल सरकारों, विद्रोहियों और आतंकवादियों को हथियार की आपूर्ति लाइन काट दी गई है तो इस तरह के संघर्ष तुरन्त समाप्त किया जा सकता है। उदाहरण के रूप में हर कोई जानता है कि सऊदी अरब यमन के ख़िलाफ युद्ध में पश्चिम से ख़रीदा हुआ हथियार इस्तेमाल कर रहा है जिस से औरतों और बच्चों सहित हज़ारों निर्दोष नागरिक मारे जा रहे हैं और अपार विनाश हो रहा है। अंत हथियारों के इस प्रकार व्यापार का क्या परिणाम होगा? यमन के लोग जिनका जीवन और भविष्य नष्ट किए जा रहे हैं वे न केवल घृणा लिए होंगे और सउदी अरब से बदला लेंगे बल्कि वह सऊदी अरब को हथियार मुहैया करने वालों के ख़िलाफ और आमतौर पश्चिम के ख़िलाफ भी निराश हो जाएंगे। उनकी युवा पीढ़ी के पास भविष्य की कोई उम्मीद न होगी और इतने घिनौने अत्याचार को देखते हुए यह युवा चरमपंथ की ओर जाएंगे और इस तरह आतंकवाद और चरमपंथ का एक नया भयानक दौर शुरू हो जाएगा। इन विनाशकारी और घिनौने परिणाम के सामने कुछ करोड़ डालर की क्या स्थिति है?

(शेष.....)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad